THE MICE THAT ATE IRON

TALES FROM PANCHTANTRA

लोहा खाने वाले चूहे

पंचतंत्र की कहानी



The Mice that Ate Iron

लोहा खाने वाले चूहे

पंचतंत्र की कहानी



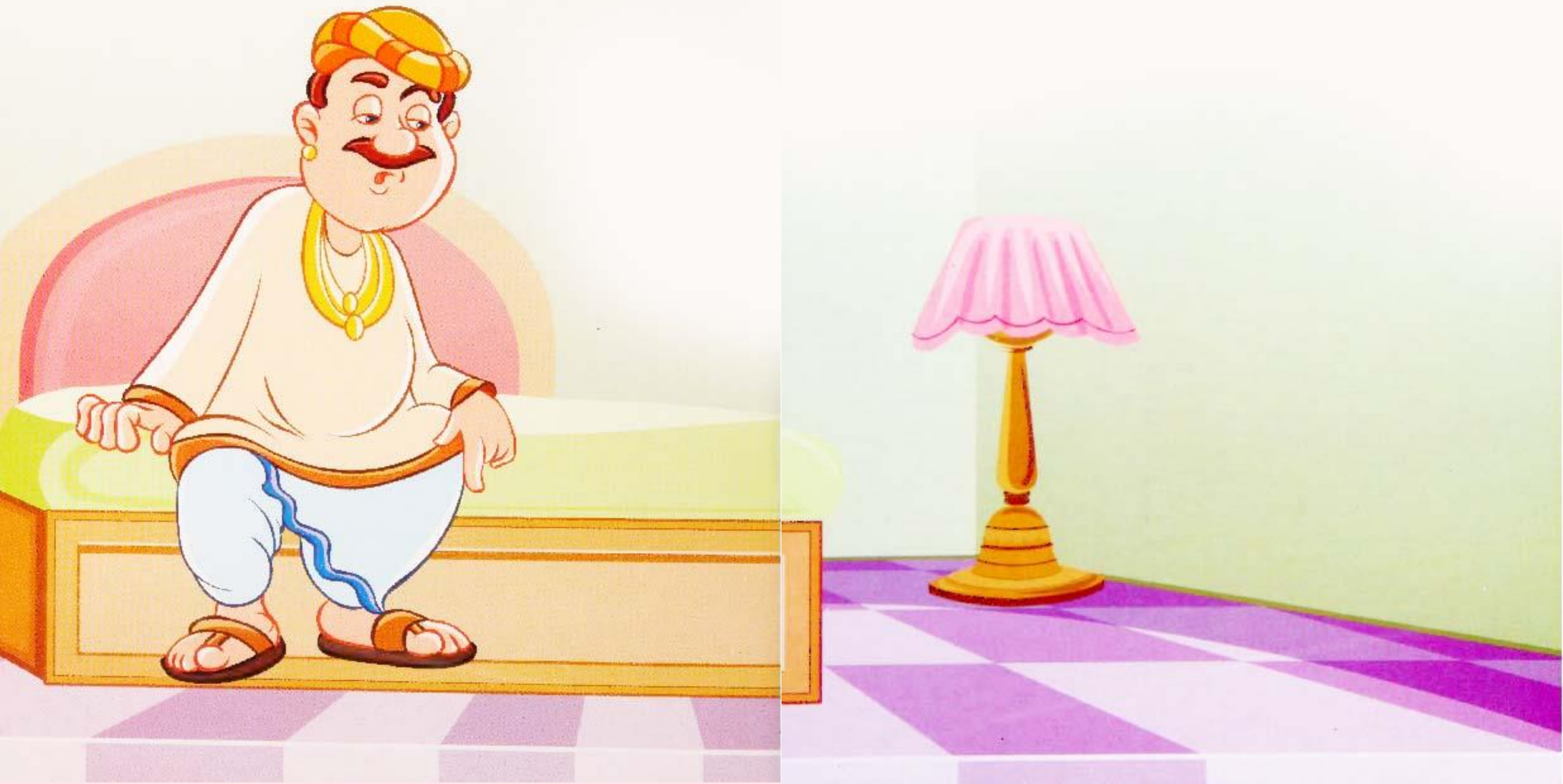
Tales from Panchatantra

Once upon a time, there was a wealthy merchant named Naduk. Naduk however suffered a heavy loss in his business and lost a lot of money.

He decided to move to another town and try his luck there.

एक समय की बात है, नादुक नाम का एक धनी व्यापारी था. नादुक को अपने व्यवसाय में भारी नुकसान हुआ और उसने अपना बहुत सारा पैसा खो दिया.

फिर उसने एक दूसरे शहर में जाकर वहां अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया.

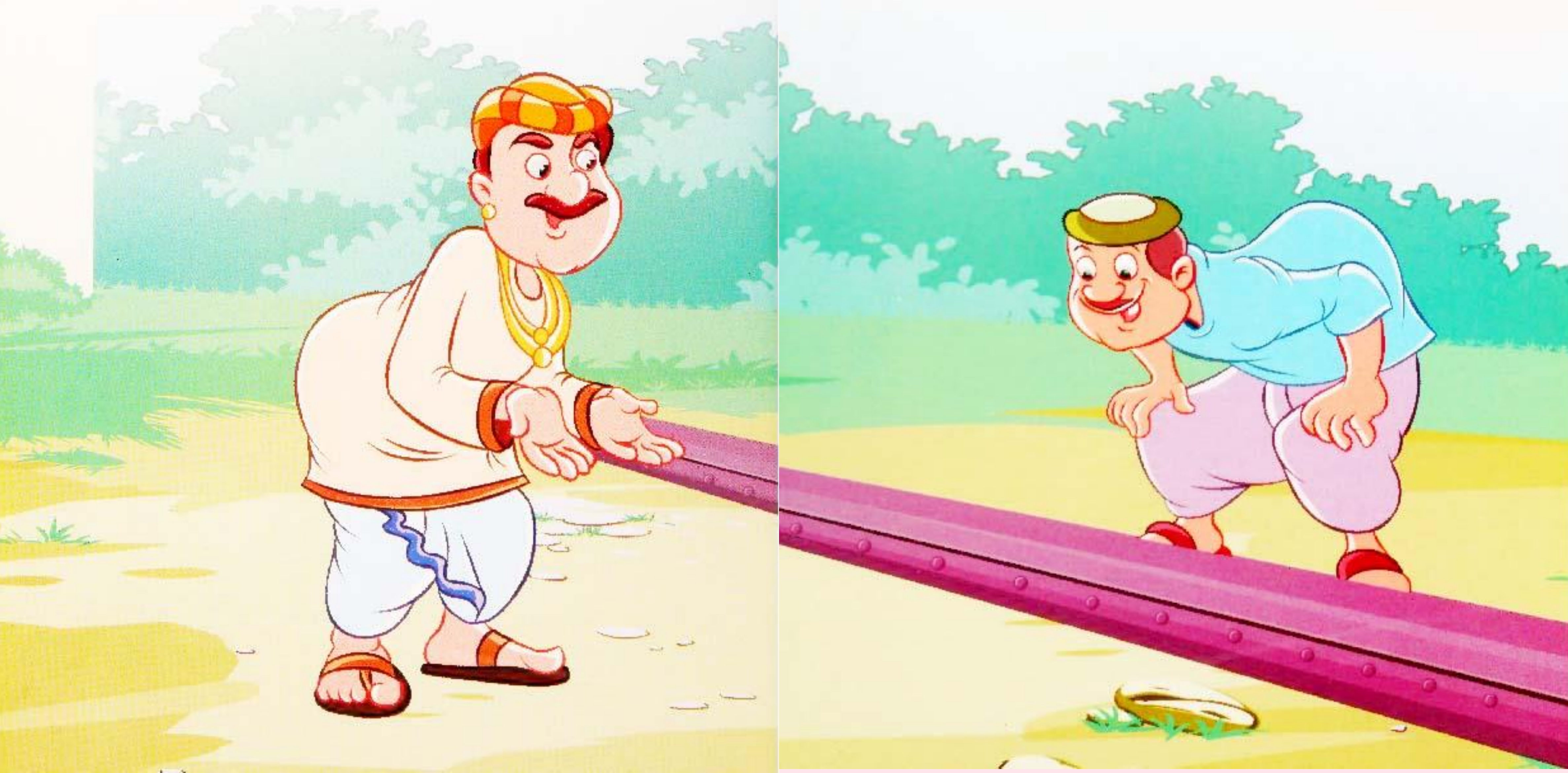


Before leaving, Naduk went to meet his friend Lakshman.

He wanted to leave an iron beam with Lakshman as transporting the beam to another town would be very difficult.

जाने से पहले नादुक अपने मित्र लक्ष्मण से मिलने गया.

वो लक्ष्मण के पास एक लोहे का गर्डर छोड़ना चाहता था क्योंकि उस गर्डर को दूसरे शहर में ले जाना बहुत मुश्किल था.

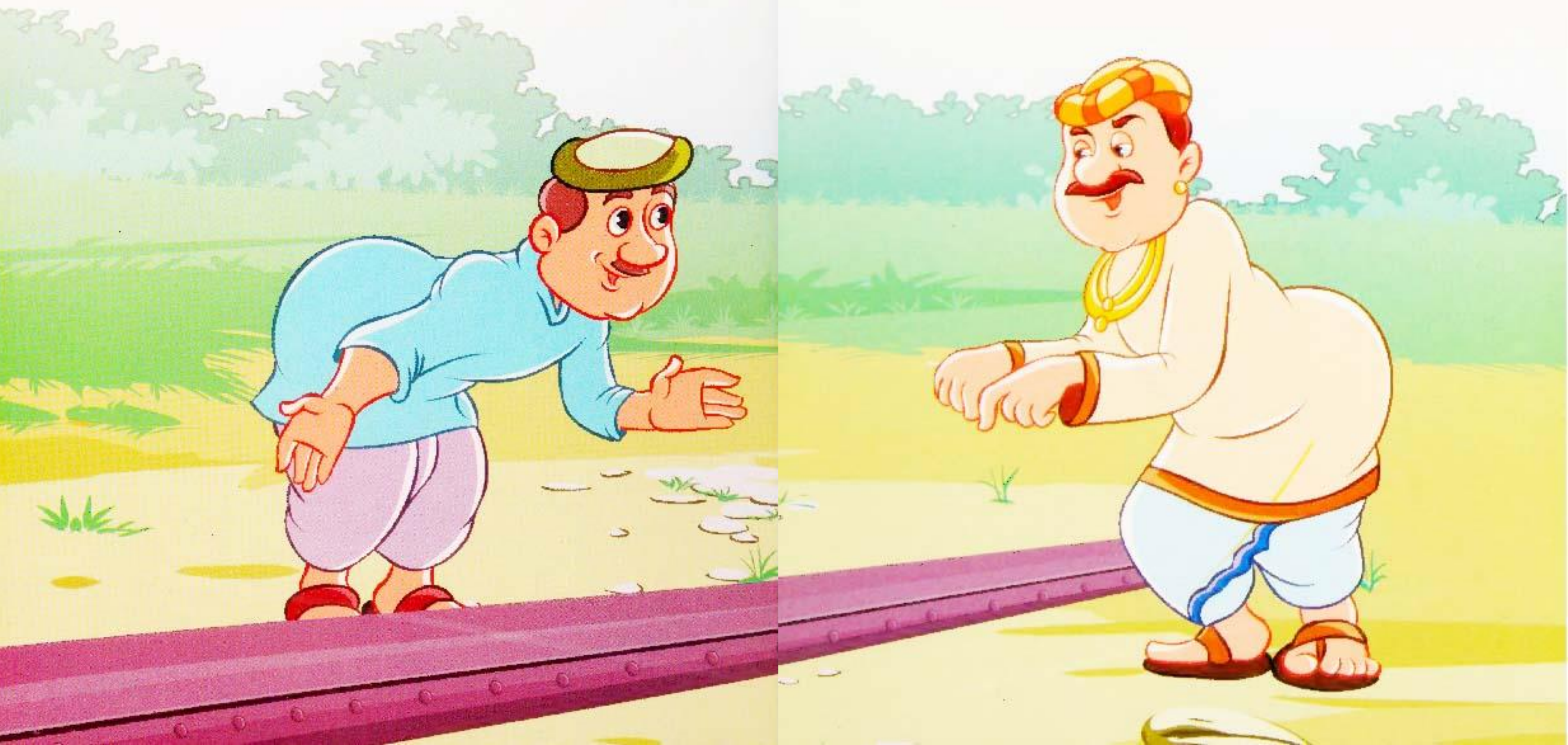


"Fear not friend," said Lakshman. "Your beam will be safe with me and you may take it whenever you want."

Naduk thanked Lakshman for his kindness and left.

लक्ष्मण ने कहा, "डरो मत मित्र. तुम्हारा गर्डर मेरे पास सुरक्षित रहेगा और तुम जब चाहो उसे ले जा सकते हो."

नादुक ने लक्ष्मण को उसकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया और फिर वो चला गया.



A few years went by and Naduk's business flourished. He grew wealthy once again and decided to move back to his old town.

He bought a huge mansion there and hired several servants to take care of his house.



कुछ साल बीत गए और फिर से नादुक का व्यवसाय फल-फूलने लगा. एक बार वो फिर अमीर हो गया और उसने अपने पुराने शहर में वापस जाने का फैसला किया.

नादुक ने वहां एक बड़ी हवेली खरीदी और उसकी देखभाल के लिए कई नौकर रखे.



After a few days Naduk decided to go and meet Lakshman. Lakshman was very glad to see his friend.

He was also happy about Naduk's successful business. The two chatted for quite a while about various affairs.



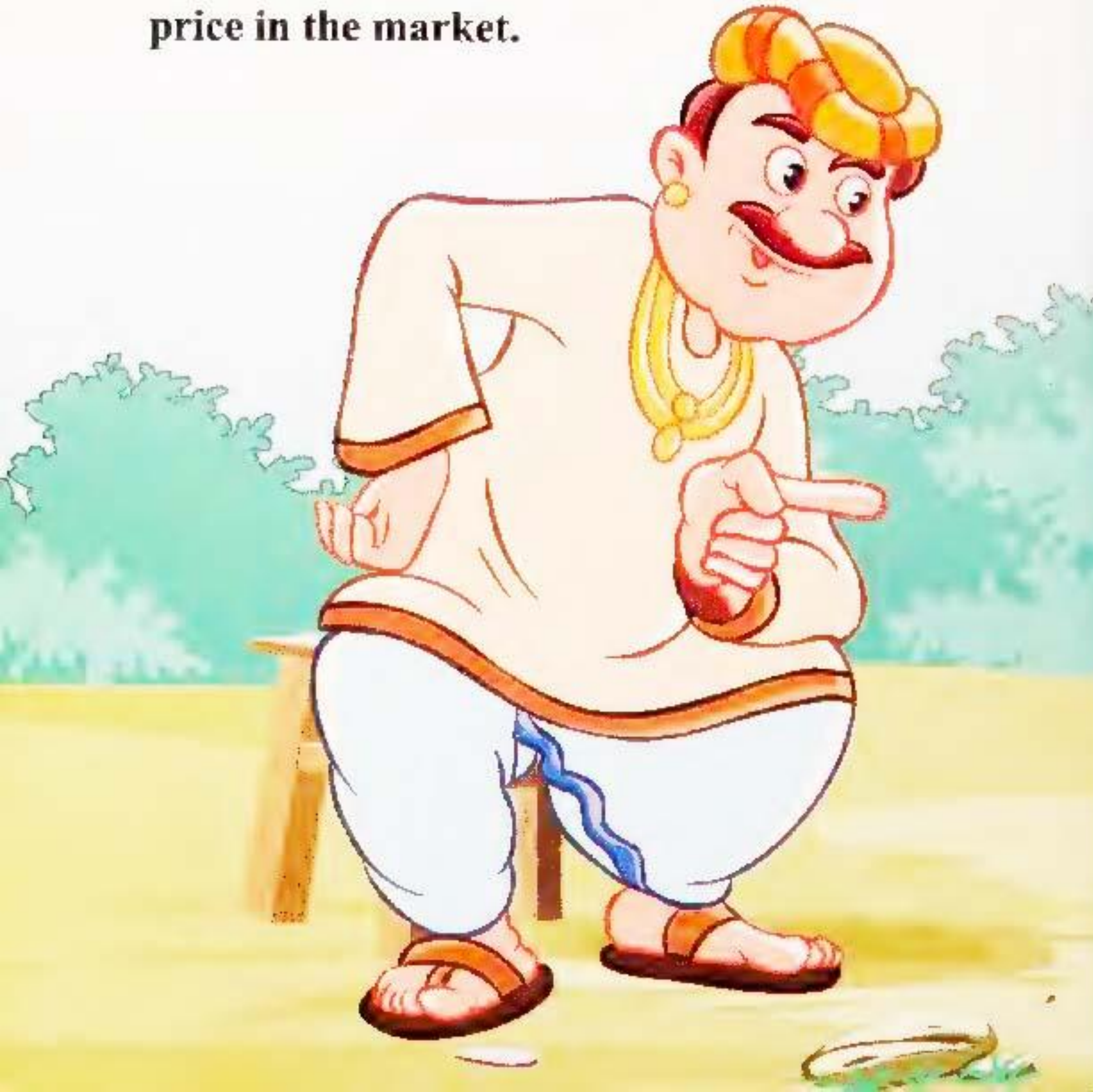
कुछ दिनों के बाद नादुक, लक्ष्मण से जाकर मिला. अपने मित्र को देखकर लक्ष्मण बहुत प्रसन्न हुआ.

वो नादुक के सफल व्यवसाय से भी खुश था. दोनों पुरानी दिनों की बातें काफी देर तक करते रहे.



Finally before leaving Naduk said to Lakshman, "Before leaving I had given you an iron beam to keep for me. Now that I am back, may I have it?"

On hearing this Lakshman turned red and looked very worried. He had planned to sell the beam as it would fetch a good price in the market.



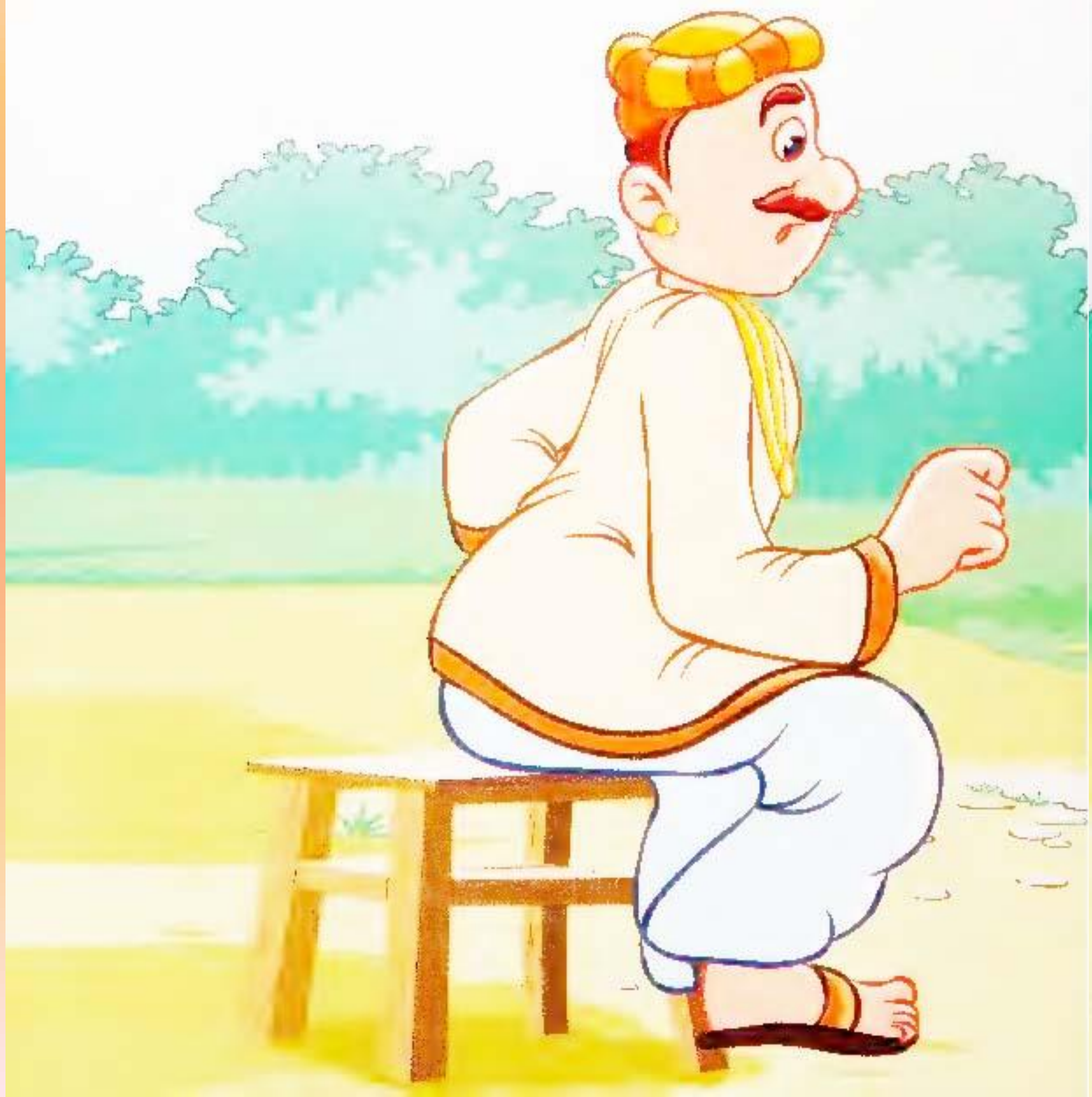
अंत में, जाने से पहले नादुक ने लक्ष्मण से कहा, "जाने से पहले मैंने तुम्हें रखने के लिए एक लोहे का गर्डर दिया था. अब जब मैं वापस आ गया हूं, तो क्या मैं उसे वापिस ले सकता हूं?"

यह सुनकर लक्ष्मण का चेहरा लाल हो गया और बहुत चिंतित दिखा. उसने गर्डर को बेचने की योजना बनाई थी क्योंकि उसे बाजार में उसकी अच्छी कीमत मिल रही थी.



"Oh! The beam you say? Oh! The thing is, I have had some mice in the basement this year.

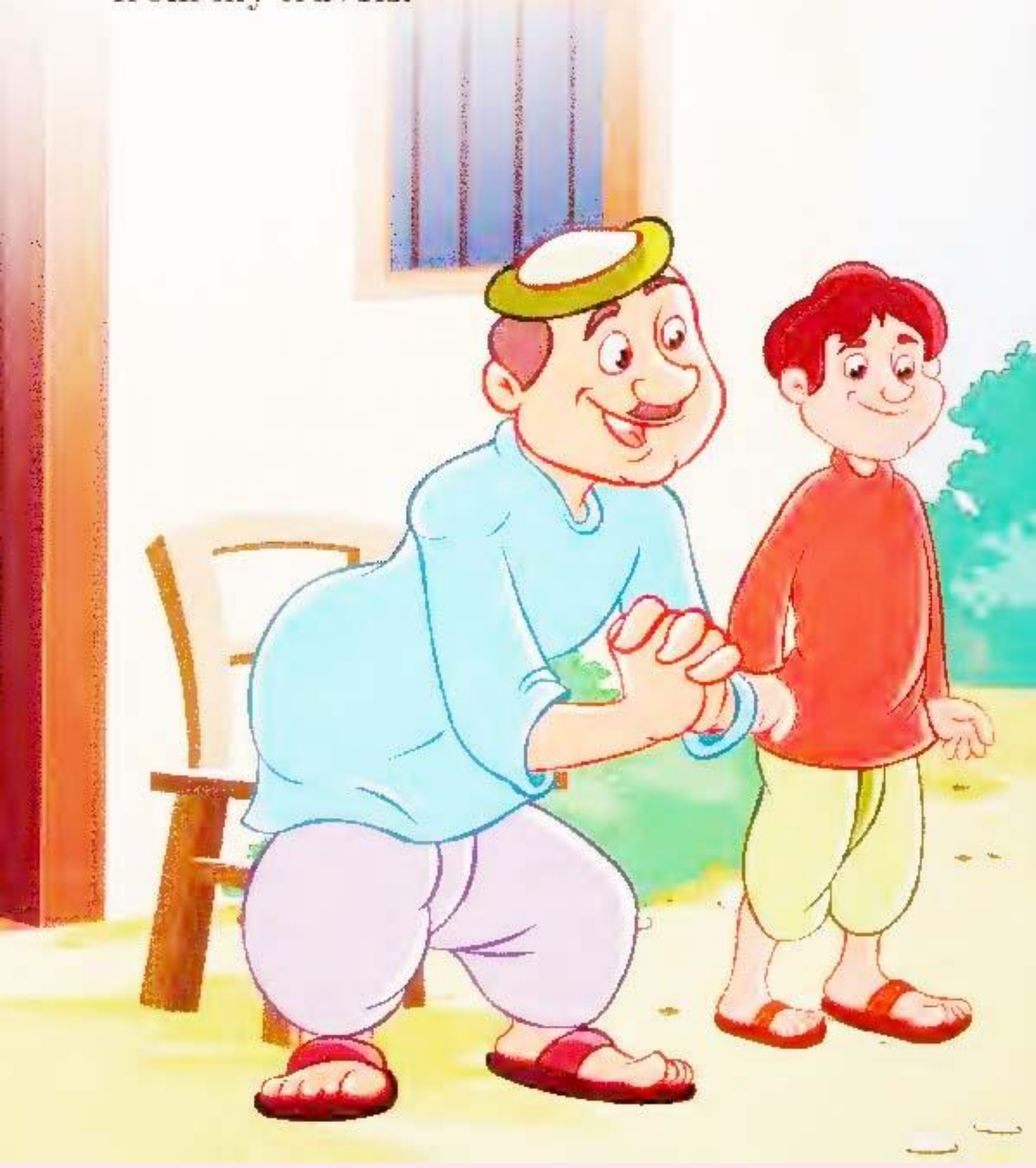
"It is very unfortunate, but these pesky mice ate your iron beam until it was all gone!" stuttered Lakshman.



"अच्छा आप गर्डर की बात कर रहे हैं. लेकिन इस साल मेरे तहखाने में तमाम चूहे आ गए. यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन वे खतरनाक चूहे आपके लोहे के गर्डर तक को खा गए!" हकलाते हुए लक्ष्मण ने कहा.



On hearing this Naduk was not convinced. But he said to Lakshman, "I am sorry to hear that. Anyway, will you please send your son Ramu home with me. I would like him to collect a present that I have brought you from my travels."



लेकिन नादुक को लक्ष्मण की बात पर यकीन नहीं हुआ. लेकिन उसने लक्ष्मण से कहा, "मुझे यह सुनकर दुख हुआ. वैसे क्या आप कृपया अपने बेटे रामू को मेरे साथ घर भेजेंगे. मैं उसे वो उपहार देना चाहता हूँ जो मैं अपनी यात्रा में आपके लिए लाया था."



Naduk took Ramu with him and locked him in the basement of his house.

After a few hours Lakshman grew worried that his son had not yet returned. He too went to Naduk's house.

नादुक, रामू को अपने साथ ले गया और उसने लड़के को अपने घर के तहखाने में बंद कर दिया.

कुछ घंटों के बाद लक्ष्मण को चिंता हुई क्योंकि उसका बेटा अभी तक वापस नहीं लौटा था. फिर लक्ष्मण, नादुक के घर गया.



"Where is my son?" asked Lakshman.

"On our way here, a hawk carried him off," said Naduk.

The two got into a fierce argument since Lakshman said that it was impossible for a hawk to carry off his son.



"मेरा बेटा कहाँ है?" लक्ष्मण ने पूछा.

नादुक ने कहा, "यहां आते समय रास्ते में, एक बाज़ उसे उठाकर ले गया."

जब लक्ष्मण ने कहा कि एक बाज उसके बेटे को कभी उठा कर नहीं ले जा सकता था, तो फिर दोनों में तीखी बहस हुई.



Eventually they went to the local magistrate. The magistrate too said that it was impossible for a hawk to carry off a young boy.

Clever Naduk then said, "If the mice in Lakshman's house can eat away my iron beam, of course a hawk can carry his son!"



अंततः वे स्थानीय मजिस्ट्रेट के पास गए. मजिस्ट्रेट ने भी कहा कि एक बाज के लिए एक युवा लड़के को उठाकर ले जाना असंभव था.

चतुर नादुक ने तब कहा, "यदि लक्ष्मण के घर के चूहे मेरे लोहे के गर्डर को खा सकते हैं, तो निस्संदेह एक बाज़ उसके बेटे को भी ले जा सकता है!"

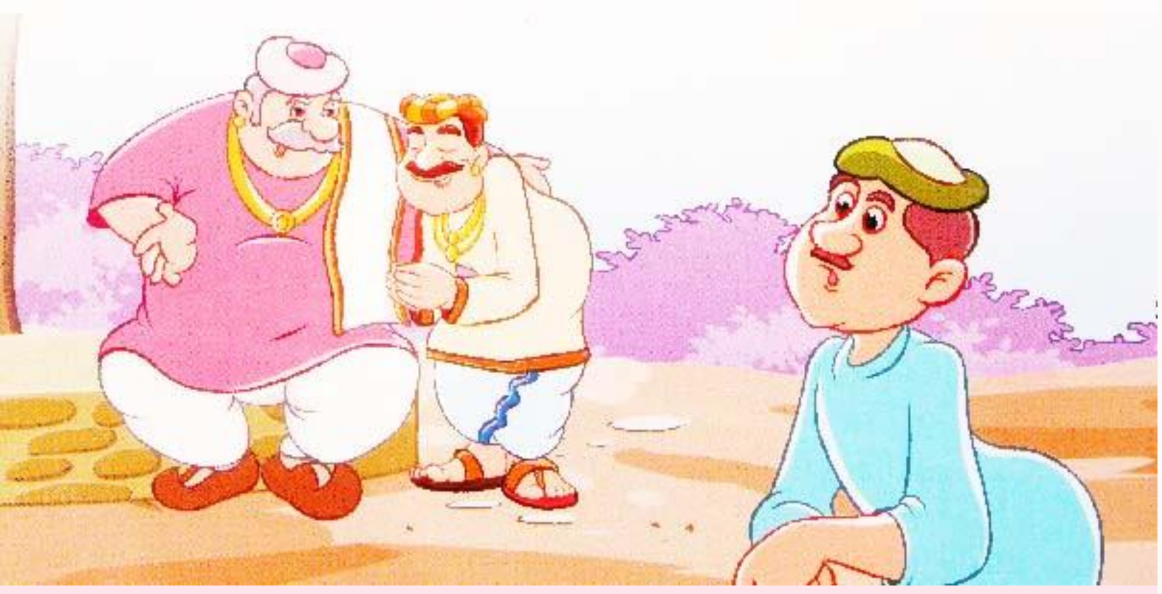


On hearing this, the magistrate demanded the whole story. He finally ordered Lakshman to return the iron beam and Naduk to return Lakshman's son.

Lakshman apologized to Naduk for trying to trick him and the two soon became friends once again.

यह सुनकर मजिस्ट्रेट ने पूरी कहानी सुनने की मांग की. अंततः उन्होंने लक्ष्मण को लोहे का गर्डर लौटाने का आदेश दिया और नादुक को लक्ष्मण का पुत्र लौटाने का.

लक्ष्मण ने नादुक से धोखा देने की कोशिश के लिए माफी मांगी और दोनों जल्द ही एक बार फिर दोस्त से बन गए.



अंत